DSSSB PRT, TGT & PGT

दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड

ROJGAR With ANKIT

Part(A+B)

SCHOLAR BATCH

हिन्दी

छंद

Part -3

LIVE 09-05-2024 09:00 AM

गीतिका – इसके प्रत्येक चरण में 14 एवं 12 मात्राओं पर यति होती है। इस प्रकार इसमें प्रत्येक पंक्ति में 26 मात्राएँ होती है।

जैसे - जो अखिल कल्याणमय है, व्यक्ति तेरे प्राण में +12

कौरवों के नाश पर है, रो रहा केवल वही।। (14) 12

हरिगीतिका – इसमें 16 व 12 मात्राओं पर यति होती है।
इसकी एक पंक्ति में 28 मात्राएँ होती है।

जैसे - अन्याय सहकर बैठ रहना, यह महा दुष्कर्म है

न्यायार्थ अपने बन्धु को भी, दण्ड देना धर्म है।

इस बात पर ही पाण्डवों का, कौरवों से रण हुआ

जो भव्य भारतवर्ष के कल्पांत का कारण हुआ।।

(ii). अर्ध्द सममात्रिक छन्द – जिस छन्द के प्रथम व तृतीय चरण समान हों एवं द्वितीय व चतुर्थ चरण समान हों, उन्हें अर्ध्द सममात्रिक छन्द कहते है।

जैसे – बरवै, दोहा, सोरठा, उल्लाला

ट्रिक- वै दो सो उल्लू

बरवै दोहा सोरठा उल्लाला।

बरवै – यह एक अर्द्धसममात्रिक छन्द है।

इसके I और III चरण में 12-12 तथा II और IV

I और III → विषम चरण

II और IV → सम चरण

चरण में 7-7 मात्राएँ होती हैं। इस प्रकार एक पंक्ति में
19 मात्राएँ होती हैं।

जैसे-

अलकावलि मह लटकनि, ललित ललाट।

जनु उडुगन विधु सनमुख, तम करि बाट।।

दोहा – यह अर्द्धसममात्रिक छन्द है।
इसके I व III चरण में 13-13 तथा II व IV चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं।

जैसे –

लोचन चपल कटाच्छ सर, अनियारे विषपुरी ।

मन मृग बेधै मुनिन के, जगजन सहत बिसुरी ।।

सोरठा – यह दोहा का उल्टा होता है। यह भी अर्द्धसममात्रिक छन्द है। इसके I व III चरण में 11-11 तथा II व IV चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं।

जैसे -

कुंद इंदु सम देह, उमा रमन करुनायतन।

जाहि दीन पर नेह, करहु कृपा मर्दन मयन ।।

उल्लाला – यह अर्द्धसममात्रिक छन्द होता है। इसके I व III चरण में 15-15 तथा II व IV चरण में 13-13 मात्राएँ होती है।

हे शरणदायिनी देवि तू, करती सबका त्राण है

है मातृभूमि संतान हम, तू जननी तू प्राण है ।।

(iii). विषम मात्रिक छन्द – इस मात्रिक छन्द के चारों चरणों में मात्राओं की संख्या असमान होती है।

द्विक - कुछ

(6) कुण्डलिया
D + R
दोहा + रोला

छप्पय (6)
R + O
रोला + उल्लाला

कुण्डलिया – इसमें छः चरण होते हैं। पहले दो चरण दोहा के तथा अन्तिम चार चरण रोला के होते हैं। यह एक विषममात्रिक छन्द है।

* दोहे का अन्तिम चरण रोला के प्रथम चरण में आवृत्त (शामिल) रहता है।
* कुण्डलिया छन्द का आरम्भ जिस शब्द से होता है अन्त भी उसी शब्द से होता है।

आरम्भ

जैसे - दौलत पाय न कीजिए, सपने में अभिमान।
चंचल जल दिन चारि को, ठाँऊ न रहत निदान — दोहा

आवृत्त

ठाऊँ न रहत निदान, जियत जग में जस हीजै
मीठे वचन सुनाय, विनय सब ही की कीजै
कह गिरधर कविराय, अरे यह सब घर डोलत
पाहुनी निसि दिन चारी, रहत सबही के दौलत ।। — रोला

अन्त

लाठी में गुन बहुत है सदा राखिए संग
गहरे नदी नाले जहाँ तहाँ बचावे अंग
तहाँ बचावै अंग, झपटि कुत्ता कहँ मारे
दुश्मन दावागीर होय, तिनहूँ को झारै
कह गिरिधर कविराय, सुनो हे दूर के बाठी।
सब हथियार छाँडि, हाथ महँ लीजै लाठी।।

दोहा

रोला

छप्पय – छप्पय में छः चरण होते हैं इसके पहले चार चरण रोला के तथा अन्तिम दो चरण उल्लाला के रहते हैं

* रोला के चारो चरन में 24 मात्राएँ होती हैं
* उल्लाला के दो चरण में 28 मात्राएँ होती हैं

जैसे – जिसकी रच में लोट, लोटकर बड़े हुए हैं।
घुटनों के बल सरक, सरक कर खड़े हुए हैं
परमहंस सम बाल्यकाल में सब सुख पाए।
जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाए
हम खेले कूदे हर्षयुक्त जिसकी प्यारी गोद में
हे मातृ भूमि तुमको निरख मग्न क्यों न हो मोद में ॥

– रोला
– उल्लाला

वीर (आल्हा) – वीर छन्द के प्रत्येक चरण में 16, 15 पर यति देकर 31 मात्राएँ होती है तथा अन्त में गुरू-लघु होना आवश्यक है।

जैसे – हिमगिरि के ऊतुंग शिखर पर बैठ शिला की शीतल छाँह।

एक पुरुष भीगे नयनों से देख रहा था प्रलय – प्रवाह ।।

मुक्तक छन्द – जिस छन्द में मात्राओं तथा वर्णों की निश्चित संख्या को बन्धन न मानकर भावाभिव्यक्ति को ही प्रमुखता दी जाय, उसे मुक्त या मुक्तक छन्द कहते है।

जैसे - वह तोड़ती पत्थर,
देखा मैंने उसे,
इलाहाबाद के पथ पर।

निराला की कविता
जूही की कली
मुक्तक छन्द